0

बसंती हवा कविता का काव्य सौन्दर्य लिखिए

केदार नाथ अग्रवाल

बसंती हवा केदार नाथ अग्रवाल द्वारा रचित प्रकृति परक कविता है। वे प्रगतिवादी चेतना के कवि हैं। उन्होने बसंती हवा कविता में प्रकृति के माध्यम से मानवीय सौन्दर्य की अभिव्यंजना की है। यह आत्मकथात्मक कविता है। इसे मै शैली में लिखा गया है। बसंती हवा कहती है कि मैं युगों से संसार को, आकाश को बिना परिश्रम और कष्ट झेले संभाले हुए हूँ। मैं पूरी धरती पर बसंत का मीठा संगीत गुंजाती फिरती हूँ। मैं सभी प्राणियों को प्रेम रस पिला कर जीवित रखती हूँ। रूप की कसम है, प्रेम की कसम है, मेरी बात सुनो। मैं विचित्र हवा हूँ, बावली हूँ मस्त मौला हूँ। मुझे कुछ भी चिंता नहीं है। निडर हूँ चारों तरफ घुमती हूँ और अजब की मुसाफिर हूँ। मेरा कोई निश्चित घर नही है और न ठिकाना है। मुझे किसी कि इच्छा नहीं है और न किसी कि आशा है। मैं हर गाँव,, बस्ती,नदी, रेत, निर्झर, हरे खेत, पोखर आदि सभी को झुलाती रहती हूँ।

कवि बसंती हवा का चित्रण एक मस्त बावली और अल्हड़ नारी के रूप में किया है। बसंती हवा कहती है कि मै महुआ के पेड़ पर चढ़ जाती हूँ उसे थपथपाती हूँ फिर धम से गिर जाती हूँ। फिर आम पर चढ़ जाती हूँ, उसे झकझोरती हूँ, उसके कान में कू बोलती हूँ पर फिर वहाँ से भाग कर हरे खेत में पहुँच जाती हूँ। फिर गेहुओं को झकझोरती हूँ। कई पहर तक खेतों में रहती हूँ। एक बार मैंने देखा एक अलसी को जिसके सिर पर कलसी थी मैंने अलसी को झकझोर दिया पर कलसी गिरी नहीं। उसके बाद मै सरसों के खेत में पहुँची और काफी देर तक पड़ी रही। वहाँ मुझे बड़ा ही मजा आया मुझे सुझबुझ की खबर नहीं क्योकि मै बसंती नवेली हूँ।

ऐसा लगता है कि कवि इस अल्हड़ बाबली बसंती हवा को अल्हड़ बावली मस्त नवयुवती की तरह दौड़ा रहा है। झुमा रहा है और खेला रहा है बसंती हवा कहती है कि मुझे देखकर अरहरी लजा गई। मनाने पर भी नहीं मानी। उसे छोड़कर मैं आगे बढ़ गई। एक पथिक आ रहा था, मैंने उसे धकेल दिया। मैं उसकी छाती से जा लगी फिर कमर से चिपक गई और ठठा कर हँस पड़ी। मेरी हँसी देखकर सारी दिशाएँ हँस पड़ी।

प्रस्तुत कविता आत्मकथत्मक शैली में लिखी गई है। भाषा में गजब का प्रवाह है। विषय के अनुसार भाषा भी झूम रही है। कविता में तुकान्त है। अलंकार आरोपित नही है बल्कि भाषा के स्वाभाविक अंग बनकर आए हैं।

0

Scanned by CamScanner